सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• प्रदीप सोनी 'शून्य'

सृजक-सृजन-समीक्षा

प्रदीप सोनी 'शून्य'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत
"सृजक"
प्रदीप सोनी 'शून्य' का परिचय

नाम- प्रदीप सोनी 'शून्य'
पत्नि का नाम - श्रीमती रेखा सोनी
माता का नाम - श्रीमती कृष्णा सोनी
पिता का नाम - श्री बाबूलाल सोनी
जन्म -03 नवम्बर1959 बेगमगंज (रायसेन) मध्य प्रदेश
शिक्षा -एम .ए. (हिंदी, संस्कृत, अर्थशास्त्र,दर्शन शास्त्र)
संप्रति - प्रधानाध्यापक शासकीय माध्यमिक शाला सुमेर बेगमगंज
काव्य संकलन - "कंधों पर रखे प्रश्न"
लेखन - 1980 से अनवरत ,कादम्बिनी ,सरिता तथा समाचार पत्रों में कविताओं, लेखों का प्रकाशन
दूरदर्शन भोपाल , आकाशवाणी भोपाल से कविताओं का प्रसारण।
रुचियाँ - अभिनय ,कार्यक्रम संचालन
पुरस्कार - साहित्य शिरोमणि सम्मान, आचार्य सम्मान (राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान),राष्ट्रिय शिक्षक सम्मान, राज्यस्तरीय कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

आत्म कथ्य

कविता बचपन से ही परिवार के वातावरण में घुली हुई मिली। पिता जी की सृजनशीलता का प्रभाव काव्य मन पर अधिक पड़ा ।छात्र मन में संचित भावनाएँ जो मंच न मिलने से सुप्त सी पड़ी थी। शिक्षक जीवन मिलते ही जाग गयीं। राज्य स्तर पर भाषा के विभिन्न प्रशिक्षण , संगोष्ठियाँ और समागम ने साहित्य सृजन को हवा दी। इस साहित्य पवन ने एक शिक्षक को फिर से एक छात्र बना दिया। जीवन का सौंदर्य , शब्दों का श्रृंगार कर झाँकने लगा।विषमता या अन्याय को देखकर भाव तांडव कर कागज़ पर नाचने लगे । ओज , माधुर्य और प्रसाद हृदय में रंगोली सजाने लगे। बस ! कविता का साम्राज्य फैलने लगा और अंतरा तक पहुँच गया। सहृदयी जनों की शुभ कामनाएँ ,आशीष और मार्गदर्शन कविता की कमनीयता को और निखार रही हैं।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

"सृजक का सृजन"

गणित

पाप का जो ढेर था , प्रयाग हो गया।
काँटों सा जो शीतल था ,आग हो गया।

ऐसी बदली रीत , अपने देश की यारो,
शोर सारा मिल कर , राग हो गया।

होली कजलियां , सब हो गईं बेमानी,
कालापन दिलों का सब , फाग हो गया।

चापलूसी की महिमा ,मंडित हुई इस तरह,
सच का बदला सौन्दर्य , दाग हो गया।

सहानुभूति के दो शब्द जिसे मिल गए ,
धीरे से वह आस्तीन का नाग हो गया।

देश की गणित सारी बदली 'शून्य' हो गई,
गुणा करते करते सब , भाग हो गया।

साथी मेरे बन जाओ

रूखे रूखे मन को , आओ ! सुमन कर दो ।
सूनापन दूर करो , सुरभित जीवन कर दो।
साथी मेरे बन जाओ, गीत मिलन के गाओ।

भावनाओं के पनघट , सरिता से हैं दूर दूर।
विपदाओं के सारे पल, देख रहे हैं घूर घूर।
तन्हाइयों के तम में ,आशा के दीप जलाओ
साथी मेरे बन जाओ, गीत मिलन के गाओ।

वैभव प्रतिदिन आकर ,उलाहने देकर जाते।
जर्जर कुटीर पर मेरी, काले बादल मंडराते।
प्यासे प्यासे मन को , नीर अंजुरी भर लाओ।
साथी मेरे बन जाओ, गीत मिलन के गाओ।

क्या अपने क्या सपने, हर दिशा पराई सी।
साँसों का क्या कहना,पल पल घबराई सी।
प्रीत मीत बन जाए , आकर युक्ति सुझाओ।
साथी मेरे बन जाओ, गीत मिलन के गाओ।

राहें रूठी हैं कब से , मंजिल दर्शन दूभर ।
प्रार्थनाएँ निःशब्द हैं, आशीष हुए बेअसर।
राहत बरसेगी कुछ ,अपना दामन लहराओ।
साथी मेरे बन जाओ, गीत मिलन के गाओ।

सुसंस्करण चाहिए

गलबहियाँ करते करते
दुःख की धूप सही।
आँसू मिलकर छलके, अपनी बीती आप कही।

मीठी मीठी बातों वाले,
मधुर आचरण चाहिए।
धूल धूसरित होकर, स्वर्णिम बचपन काटे ।

कलरव सुन सुनकर
भाग गए थे सन्नाटे ।
उन्हीं पलों ,सपनों का, नवीनीकरण चाहिए।

नन्हे पैरों चल कर आती
ईद हमारे आँगन में ।
रंग बिखेरा करती थी, होली हर दामन में ।

हों पुनीत यादें जिसमें,
ऐसे संस्मरण चाहिए।
समता लाड़ प्यार के, छाए रहते थे बादल ।

खूब सुहाती सबको
बारिश वाली दल दल।
वही नियति नीयत वाला, सुसंस्करण चाहिए ।

मन की मनुहार

मन की मनुहार है ,मान जाओ , जाओ न ।
तृप्ति की बहार है, गीत गाओ, गाओ न ।
मौसम का परिवर्तन है।
भावनाओं का नर्तन है।
आज तुम्हारे चंद्रोदय का,
शीतल शीतल दर्शन है।
भाव प्रणय समर्पण, जगाओ, जगाओ न।
मन की मनुहार है ,मान जाओ ,जाओ न ।
नयनों का सम्मोहन है।
रूप सज्जित यौवन है।
स्निग्ध स्पर्श सजलती,
स्पष्ट हर एक धड़कन है।
शब्द शब्द प्यार है,हृदय छाओ, छाओ न ।
मन की मनुहार है ,मान जाओ , जाओ न ।
दिव्य दृष्टि आलिंगन है।
सतत मोहती चितवन है।
तुम हो जहाँ जहाँ भी,
वहाँ वहाँ जैसे मधुवन है।
ये अनमोल पल ,यहाँ बिताओ ,बिताओ न।
मन की मनुहार है ,मान जाओ , जाओ न ।

तेरा मेरा प्यार

शब्द मेरे अर्थ तेरे, प्रीत की मनुहार है।
साँसों की लकीर पर लिखा,तेरा मेरा प्यार है।

प्रथम प्रहर मिलन का ,सर्वश्रेष्ठ छंद है।
धड़कते हृदयों में लिखा एक ही अनुबंध है।
स्वप्न हो या जागरण , वसंत सी बहार है।
साँसों की लकीर पर लिखा,तेरा मेरा प्यार है।

अधर धरे हुए हैं रूप , रूप के गाँव का।
धूप सी बिखर गईं , दे परिचय छाँव का।
मेरे हर प्रश्न पर , इक रूठने का प्रहार है।
साँसों की लकीर पर लिखा,तेरा मेरा प्यार है।

लजे हुए झुके नयन ,छिपी मीठी सी पीर है।
धीरे से खिंच गई,मंद मुस्कान की लकीर है।
और फिर मौन निमंत्रण हुआ कई बार है।
साँसों की लकीर पर लिखा ,तेरा मेरा प्यार है।

प्रतीक्षा के मौसम में भेदती,शूल सी शंकाएँ।
कितनी बार लाँघे हम ,सहनशील सीमाएँ।
प्रदीप तेरी दृष्टि में फसा, कौन चित्रहार है।
साँसों की लकीर पर लिखा , तेरा मेरा प्यार है।

मानव मन

क्या कर लेंगे
संचित,
भौतिक संसाधन।।
यदि मुस्कानों
में न भीगे,
मानव मन।।
सूख न पाई
आँसू से भीगी,
जीवन चादर।।
नाराज रहा
मानव प्रेम,
और नैतिक आदर।।
तो विधवा सा
रूप लगेगा,
जीवन का आँगन।
बचपन
किशोर होता,
सिसकियाँ पी पीकर।।
तरुणाई
बदरंग होती,
विश्वासों से घिस कर।।
करुणा कंठ
रुँधा है ,
निष्ठुरता का कर आचमन।।

जीवन की चाह

योजनाओं में बहकर
आईं सुविधाओं ने,
अपात्र होने पर भी
मुझे भी चुन लिया है।
मेरे अस्तित्त्व पर
लिख दिया है ......निकम्मा
एक मनहूसियत
मेरे पीछे पड़ी है।
जो मेरे चेहरे के ओज को
निरंतर धुनक रही है।
आलस ,धमनियों को
अपनी बपौती समझने लगा है।
प्रयास ! मेरा मित्र
दूर दूर सा रहने लगा है।
श्रम अकेले में
मुझे डराता है।
मैं पहले जैसा
होना चाहता हूँ।
मरा मरा सा नहीं
जीवन सा जीवन चाहता हूँ।

मैं निर्वेद

मैं निर्वेद
निस्पृह ,
निस्वार्थ हूँ।
मुझ पर
क्या प्रभाव ?
अभिशापों का,
वरदानों का।
हित परहित के
हम सदा रहे
हम राही।
आवश्यकता से
अधिक ,
कभी चाह न चाही ।
हृदय खोल
बिछा दिया ,
अपनों को नित।
किया कभी न
अभिनन्दन,
अभिमानों का।
भूखी मुनिया
जब जब ,
आ जाती ख्यालों में।
स्वाद सभी
बदल जाते,
सजे सजे थालों में।
हम ठहरे
सच्चे ,
काँटों के व्यापारी।
हमें नहीं
डर कभी रहा,
व्यवधानों का।
रूप सुदर्शन
नैवेद्य ,
प्रणय देव का।
सृजन मन
संस्कार
हवन स्वमेव का।
लघुता
गुरुता का,
उत्सव कैसा ?
हम अतुलनीय
क्या प्रयोजन हमें ,
उपमानों का।

निविदाएँ

भले ही सफलताएँ ।
हमसे खूब इतराएँ ।
पर हम सतत प्रयास करेंगे।
तम पर उजियार लिखेंगे।
माना कि अभी विरोध का,
स्वर धीमा धीमा है।
गतिरोधों को भी मालूम है,
उनकी भी एक सीमा है।
शिखर ओर तो बढ़ना है,
साँस भले ही थक जाएँ।
हमने शब्दों से किया निवेदन,
वे सार्थक हो जाएँ।
यहाँ वहाँ बिखरे मनोभाव,
सब साधक हो जाएँ।
दरिया पार उतरना है,
भँवर बीच में कितनी आएँ।
है प्रयास यही कि
थोड़ा तुम भी तो मुस्काना।
दुखों के सम्मेलन में,
तुम हमको भी बुलवाना।
स्वीकार हमारी भी होंगी
स्नेह निहित निविदाएँ।

उठ जाओ !

उठ जाओ !
सुबह हो गई
उदासियाँ उग आईं हैं।
चिल्ल पों उड़ने
लगी है।
सामने वाली
संकरी गली में
अल सुबह
सोम रस
आचमन कर,
गरीबा
टुन्न होकर
मस्त हो गया है।
छल ,कपट
'शेव' करा कर
अपनी अपनी
दुकाने खोल रहे हैं।
मक्कारियाँ
नकाब ओढ़ कर
'शॉपिंग' करने
निकल आयी हैं।

उठ भी जाओ!
अन्याय सिर के ऊपर
चढ़ आया है।
आरक्षण
दरवाजे पर ,
फ़क़ीर बन
दर दर
माँग रहा है।
खाली पड़े बर्तन
ऊँग रहे हैं।
मजबूरियाँ
पैर तान कर,
सो रही हैं।
उठ जाओ
देखो !
सेठ अपने
नोकर को
रोज की तरह
प्रभाती
सुना रहा है।

सृजन की समीक्षा

1.

आदरणीय साहित्य शिरोमणि **प्रदीप सोनी 'शून्य'** जी, **सादर वन्दे**!!!!!

भाषा पर गहरी पकड़ और साहित्यिक शब्द संहिता के भण्डार होने का परिचय देता आपका सृजन हृदय तक झंकृत करता हैं | पेशे से राष्ट्रनिर्माता होने के साथ-साथ मानस भवन तक भाव पहुँचाने में आप वरदहस्त प्रतित होते है| कविता जिनकी रगों में बहे वो शब्दशक्ति के संयोजन के अद्‌वितीय हस्ताक्षर ही होते हैं, जैसे आप | वैसे तो आपकी रचनाएं स्वत: ही उत्कृष्टता का परिचय दे रही है, फिर भी मैं कुछ लिखकर सूरज को दीप दिखाने का दुस्साहस करने जा रहा हूँ | क्षमा सहित |

देश की गणित सारी बदली 'शुन्य' हो गई

श्रेष्ठता का खिताबी गणित है, जिसमें भावप्रबलता से सत्य का परिचय करवा रहें हैं|

साथी मेरे बन जाओ

श्रृंगार का सौन्दर्य साथ में प्रिय मिलन का आमंत्रण अदभुत है....|

सपनों का नवीनीकरण बेहतरीन संयोजन व उत्कृष्ट भावाभिव्यक्ति |

प्रणय निवेदन

सुन्दर शब्द चयन के साथ अन्दर डुबानें में सक्षम रचना

तेरा मेरा प्यार सुन्दर प्रेम अभिव्यक्ति |

मानव चित्रण मानव की भावनाओं का बेहतरीन व्यक्त चित्र |

जीवन की चाह सत्यता का प्रमाण है |

सत्य सा भूखी मुनिया का ख्याल नयन सजल कर गया, वाकई आधा हिन्दुस्तान नजरअंदाज कर जाता है उसे, वर्ना कोई भूखा न सोएं कभी|

उजास प्रेरणादायी रचना |

सुबह सवेरा दिनचर्या का यथार्थ चित्रण, साथ में स्थानीय प्रतिकों और रुपकों ने काव्य को सौन्दर्य से लबरेज कर दिया |

बेहद की मार्मिक व हृदयस्पर्शी रचनाएं लिखने में आप माहिर है|
आप शून्य नहीं बल्कि 'एक' है, जिसके पीछें शून्य चलकर गौरव का अभिवादन करता है | पटल पर आपका काव्य पढ़कर निश्चित तौर पर बहुत कुछ सीखने को मिला | समूह संचालक मण्डल का आभार जो हमें काव्यधरा के दिवाकर से परिचय करवाया | **साधुवाद....**

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

2.

साहित्य शिरोमणि आदरणीय 'शून्य' जी गणित के 'शून्य' की तरह हर विधा में जुड़कर हिन्दी साहित्य के मान को बहुगुणित करने में समर्थ हैं। शब्द चयन, शिल्प, कथ्य, भाव संयोजन श्रेष्ठ और सहज प्रभावित करने में समर्थ है।
साहित्य का यह **'शून्य'** हिन्दी के ब्रम्हाण्ड तक विस्तृत हो यही शुभकामनाएं एवं समस्त उपलब्धियों के लिए **बधाई** |
बिहारी जी कह गए --
"कहत सबै बेंदी दिए , आंकु दस गुनों होत |
शून्य को आकाश भी कहते हैं --
कबीर जी रहस्य की बात कह गए---
" सुन्न भवन में अनहद बाजे,
जग का साहिब रहता है || "
अर्थात अपने नाम और उपनाम को सार्थक करता हुआ साहित्य सृजन वन्दनीय है ।

समस्त रचनाएँ जो पटल पर प्रस्तुत हैं तथा अभी तक अंतरा समूह में पढ़ने में आईं अपने आप में पूर्णता लिए हुए है । भावपक्ष तथा कला पक्ष दोनो ही समृद्ध हैं । शब्द चयन तो मेरा मन लुभाता रहा है हमेशा से । अन्तर्दृष्टि तथा संवेदनशीलता ने जहाँ उनके भाव-पक्ष को गहराई और विविधता प्रदान की हैं, वहीं उनकी कल्पना-प्रबलता और अभिव्यक्ति-कौशल ने उनके कला-पक्ष को सँवारा है। मैंने अक्षर से पंक्ति तथा पंक्ति से कविता

का रूप उनके सानिध्य में ही प्राप्त किया है। आप मेरे प्रेरणास्रोत रहें हैं! आपकी साहित्य साधना वन्दनीय है !

रागिनी शर्मा, इंदौर

3.

आदरणीय प्रदीप सोनी 'शून्य' जी की रचनाओं को पढ़ने का सुअवसर बहुत समय पहले से मिल रहा है पर **अन्तरा-शब्दशक्ति के साप्ताहिक विशेषांक** में एक साथ भारत की विशेषता की तरह **अनेकता में एकता** के दर्शन हो जाते हैं।

उदाहरणस्वरूप कवि जीवन के गणित को ग़ज़ल में ढालता है, तो वही कवि साथी मेरे बन जाओ वाले प्रेम भावों से प्रणय निवेदन करना भी जनता है। गलबहियां करती धूप से लेकर, बारिश वाली दल-दल वाले सुसंस्करण को लौटा लाने को नियति से निवेदान, मान जाओ, मान जाओ वाला पटं गीत भी रचता है। प्रेम की विविध अवस्थाओं को परिभाषित करते हुए मानव मन पर चिंतन, मानव मन की चाहत,खुद का निर्वेद होकर भी निविदाओं के स्वीकार होने की आस और अंततः खुद को जागृत करना कि ख्वाब बन चुके अब उठ जाओ,... समय उन्हें पूर्ण करने को पुकारता है। ये कवि मन की सारी विविधताएं एक ही मन से अभिव्यक्त होकर व्यक्ति को विशिष्ट बनाती है।

साहित्य शिरोमणि आदरणीय 'शून्य' जी गणित के 'शून्य' की तरह हर विधा में जुड़कर हिन्दी साहित्य के मान को बहुगुणित करने में समर्थ हैं।

शब्द चयन, शिल्प, कथ्य, भाव संयोजन श्रेष्ठ और सहज प्रभावित करने में समर्थ है।

साहित्य का यह 'शून्य' हिन्दी के ब्रम्हाण्ड तक विस्तृत हो

यही **शुभकामनाएं** एवं समस्त उपलब्धियों के लिए **बधाई**|

प्रीति सुराना, वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com